(I) **प्रोत्साहन बनाम आज्ञामूलक आयोजन** (Planning by Inducement *Vs.* Planning by Direction)—योजनाओं के लिए साधन जुटाने के उद्देश्य से लुईस इन दोनों में भेद करता है जो कि वास्तव में पूँजीवादी व समाजवादी आयोजन में भेद है।

(अ) **आज्ञामूलक नियोजन** (Planning by Direction)—आज्ञामूलक नियोजन रूप जैसे समाजवादी समाज का अभिन्न अंग है। इस आयोजन में सरकार का अर्थव्यवस्था पर पूर्ण नियन्त्रण होता है और वह सभी आर्थिक क्रियाओं का निदेशन करती है। आज्ञामूलक नियोजन के अन्तर्गत योजना की समस्त क्रियाविधि का संचालन करने के लिए केन्द्रीय नियोजन सत्ता कुछ आदेश प्रसारित करती है, जिन्हें जनता को मानना पड़ता है। आज्ञामूलक नियोजन में इच्छा व अनिच्छा की कोई गुंजाईश नहीं होती। इसमें नियोजन करने वाली सत्ता कुछ उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को निश्चित करके जनता को कुछ विशेष रीतियों के अनुसार कार्य करने की आज्ञा देती है तथा साथ ही कुछ अन्य विशिष्ट प्रकार के कार्य करने पर भी रोक लगाती है। जैसे—नियोजन सत्ता वस्तुओं के मूल्यों पर नियन्त्रण, पदार्थों के आयात-निर्यात पर प्रतिबन्ध, वस्तुओं पर राशनिंग आदि लगा सकती है, बैंकों को कुछ निश्चित कार्यों के लिए ऋण देने की आज्ञा दे सकती है। इस प्रकार के आयोजन की सफलता तीव्र गति से होती है, परन्तु यह साम्यवादी प्रकृति के होने के कारण इसमें अनेक दोष पाये जाते हैं।

आज्ञामूलक नियोजन की विशेषताएँ (Features of Planning by Direction)

आज्ञामूलक नियोजन की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं—

(i) नियोजन का कार्य जनमत के सहयोग व स्वेच्छा पर नहीं, बल्कि कठोर आदेशों पर आधारित होता है।

(ii) आज्ञामूलक नियोजन अधिकतर समाजवादी राष्ट्रों द्वारा अपनाया जाता है।

(iii) आज्ञामूलक नियोजन केन्द्रित नियोजन का ही दूसरा रूप है।

(iv) इस प्रणाली में विकास की गति अधिक तीव्र होने की पूरी सम्भावना रहती है।

(v) नियोजन की रूपरेखा तैयार करते समय जनता की राय ली जाती है, परन्तु कार्यक्रमों को कार्यान्वित व संचालित करते समय जनमत अपेक्षित नहीं है।

आज्ञामूलक नियोजन के दोष (Defeets)

आज्ञामूलक नियोजन की निम्नलिखित कमियाँ होती हैं—

(i) उपभोक्ताओं की स्वतन्त्रता की समाप्ति (End of Consumer's Sovereignty)।

(ii) सही निर्णय लेने सम्भव नहीं (Correct decisions not possible)।

(iii) कमियों और अधिकताओं का पाया जाना (Existence of shortages and surpluses)।

(iv) अलोचशीलता का पाया जना (Evistence of inflexibility)।

(v) महँगा आयोजन (Costly Planning)।

(ब) **प्रोत्साहन द्वारा आयोजन** (Planning by Inducement)—इस आयोजन में राज्य आर्थिक क्रियाओं, कीमत नियन्त्रण एवं वित्तीय नीतियों द्वारा नागरिकों को प्रोत्साहन देकर उनसे आयोजन के कार्य में सहयोग देने के लिए उत्साहित करता है। जनता को किसी निश्चित दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है, उस पर कठोर नियन्त्रण नहीं लगाये जाते हैं। इसमें नियोजन सत्ता प्रशुल्क एवं वित्तीय नीतियों तथा मूल्य नियन्त्रण के द्वारा जनता को इस बात के लिए प्रोत्साहित करती है कि वह ढंगों को अपनाकर ही नियोजन में सहायता देकर आर्थिक विकास में योगदान दे। स्पष्ट है कि प्रोत्साहन द्वारा नियोजन में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता बनी रहती है और सामाजिक न्याय की पूर्ति होती है। ''इस प्रकार 'विपणि-यन्त्रिकाओं' को जीवित रखकर राज्य प्रलोभन, प्रोत्साहन व लोक प्रसिद्धि द्वारा जनसमुदाय को योजना के कार्यक्रमों में सहयोग देने, साधनों को योजना की प्राथमिकताओं के अनुसार विनियोजित करने तथा योजना की सफलता के लिए त्याग करने के लिए आकर्षित करता रहता है।''[1]

---

1. भगवती एवं सोनी

प्रोत्साहन द्वारा नियोजन की विशेषताएँ (Features of Planning by Inducement)

प्रोत्साहन मूलक नियोजन की निम्नलिखित विशेषताएँ होती है—

(i) प्रोत्साहन द्वारा नियोजन मुख्यतया पूँजीवादी देशों या मिश्रित अर्थव्यवस्था वाले देशों में अधिक प्रभावशाली हो सकता है।

(ii) राज्य के कठोर नियन्त्रण में इस प्रकार का नियोजन सम्भव नहीं है।

(iii) इस प्रकार के नियोजन में नियन्त्रण लगाये जाते हैं, परन्तु सुलभ (Modest) व सीमित मात्रा में।

(iv) इसमें 'बल-प्रयोग' के स्थान पर 'जन-सहयोग' व प्रलोभन को आधार माना जाता है।

(v) सरकार की स्थिति पर्दे के पीछे की स्थिति के समान होती है।

दोष (Defects)

प्रोत्साहन द्वारा आयोजन में निम्नलिखित कमियाँ होती हैं—

(i) पर्याप्त प्रोत्साहन नहीं (Not sufficient incentives)

(ii) अदृश्य निदेशन एवं नियन्त्रण (Invisible direction and control)

(iii) माँग व पूर्ति में असन्तुलन (Inequality in demand and supply)

(iv) मौद्रिक तथा राजकोषीय नीतियों की असफलता (Failure of monetary and fiscal policy)

(v) साधनों में गतिशीलता का अभाव (No Mobilisation in Resources)।

निष्कर्ष (Conclusion)

यद्यपि दोनों में से प्रोत्साहन द्वारा आयोजन श्रेष्ठ माना जाता है, परन्तु दोनों में ही त्रुटियाँ पायी जाती हैं, इसलिए अच्छा यही है कि अर्थव्यवस्था में ऐसा आयोजन अपनाया जाये जिसमें आज्ञामूलक तथा प्रोत्साहन द्वारा आयोजन का उचित समन्वय हो। इसी विचारधारा पर चलते हुए अधिकतर देश आजकल मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाते हैं जो दोनों प्रकार के आयोजन का समायोजन तथा समन्वय करता है।

Scanned with CamScanner